RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

गौतम बुद्ध

बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर

अप्रैल–2024 | वर्ष – 16 | अंक : 03 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख – रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी–5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम–सराय, औरंगाबाद, पो.–बहादुरगढ़,जिला–झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.–रामटौरिया, जिला–छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट–III, बदरपुर, नई दिल्ली–44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.–1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला–अलवर–301001,
मो. : 09887512360, 0144–3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.–08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला–महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा–पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.–33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

विभूति बोधिसत्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर

पूरा नाम : डॉ. भीमराव अम्बेडकर
जन्मतिथि: 14 अप्रैल, 1891
मृत्युतिथि : 6 दिसम्बर, 1956, दिल्ली में
पिता का नाम: रामजी सकपाल
माता का नाम: भीमाबाई
जन्मस्थान: मऊ छावनी (मध्य प्रदेश)

अपने बचपन से ही भूख–प्यास, अपमान – अन्याय, अत्याचार–अनाचार और सामाजिक विभीषिकाओं की त्रासदी झेलते हुए और अपने कठोरतम परिश्रम, त्याग, बलिदान एवं लगन के बल पर जिन महापुरूषों ने समय–समय पर भारत के गौरवमय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अपने–अपने अध्याय जोड़ते हुए नये आयाम–नई दिशाएं सुस्थापित की हैं, उनमें 'भारत–रत्न' बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम प्रमुख है।

यद्यपि डॉ. अम्बेडकर को दलितों के मसीहा तथा भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पी के रूप में ही जाना जाता है, तथापि एक महान राष्ट्रीय एवं सामाजिक चिन्तक, लेखक, पत्रकार, अर्थशास्त्री, धर्मशास्त्री, निपुण राजनीतिज्ञ एवं संविधान विशेषज्ञ, ओजस्वी वक्ता, अभिवक्ता विधिवेत्ता, प्राध्यापक, राजनेता, कुशल प्रशासक, नारी उद्धारक, बौद्ध धर्म का पुनरोद्धारक और मानवतावादी के रूप में भी उनकी सेवाओं ने जो इतिहास रचा है, वह अजर–अमिट है। जो लोग उन्हे मात्र अपने तक सीमित रखना चाहते हैं वे वास्तव मे बाबा साहेब के साथ घोर अन्याय ही करते हैं। ऐसा कदाचित इसलिए भी किया जाता है, क्योकि वे सब उनकी विलक्षण प्रतिभा तथा बहुआयामी देशसेवा से निश्चय ही पूर्णतः परिचित नहीं हैं। पूज्य बाबा साहेब के महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व को वर्ग एवं समुदाय विशेष तक सीमित नहीं किया जा सकता है। वे मात्र एक राजनेता ही नहीं, बल्कि महापुरूष भी थे। वे एक महान राष्ट्रवादी देशभक्त, मानवतावादी, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत, दलित मानवता के उत्थानकर्ता, समत्व के प्रतीक, जुझारू व्यक्ति और आधुनिक भारत के निर्माताओ मे से एक महान व्यक्ति थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म मध्य प्रदेश के मऊ छावनी में 14 अप्रैल, 1891 को महार जाति में हुआ था। उनके पिता का नाम रामजी सकपाल तथा माता का नाम भीमाबाई था। अछूत परिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें बालावस्था से ही अपनी सामाजिक स्थिति का बोध होने लगा था। अपने पिता तथा बड़े भाई के संरक्षण एवं मार्गदर्शन से ही मेधावी बालक भीमराव ने अपनी तथा अपने जैसे लोगों की स्थिति को सुधारने हेतु भारी संघर्ष द्वारा जो अर्जित किया, उसे संक्षेप में व्यक्त करना संभव नहीं है। फिर भी उनके जुझारू एवं यशस्वी जीवन का ब्यौरा इस प्रकार है :–

डा0 अम्बेडकर एक दृष्टि में -

- 14 अप्रैल, 1891 : सूबेदार रामजी सकपाल एवं श्रीमती भीमाबाई की 14वीं संतान के रूप मे, मध्य प्रदेश की महू छावनी मे जन्म।
- नवम्बर, 1900 : गवर्नमेंट वर्नाकूलर हाईस्कूल, सतारा में प्रवेश।
- जनवरी, 1908 : मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण।
- जनवरी, 1913 : बी.ए. उत्तीर्ण।
- जुलाई, 1913 : न्यूयार्क विश्वद्यिालय, मे प्रवेश हेतु गायकवाड़ छात्रवृत्ति प्राप्त
- 1915 : एम.ए. उत्तीर्ण।
- 1916 : 'नेशनल डिविडेन्ट ऑफ इण्डिया' पर पी.एच.डी.।
- 1917 – कोलम्बिया विश्वविद्यालय से पी.एच.डी प्राप्त।
- जून 1917 ' महाराजा बड़ौदा (गायकवाड़) के सैन्य सचिव नियुक्त।
- नवम्बर, 1918 : हैडनहम कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड इकोनोमिक्स, बम्बई मे पालिटिकल इकोनोमी के प्राध्यापक नियुक्त।
- जनवरी, 1920 : मराठी साप्ताहिक 'मूकनायक' का प्रकाशन।
- जून, 1923 : हाईकोर्ट आफॅ ज्यूडी केचर, बम्बई में वकालत शुरू।
- जुलाई, 1924 : दलितो के उन्नयन हेतु 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना।
- मार्च, 1927 : चावदार तालाब पर अछूतों को अधिकार दिलाने हेतु महाड़ मे सत्याग्रह
- अप्रैल, 1927 : पाक्षिक 'बहिष्कृत भारत' का प्रकाशन
- जून, 1928 : 'गवर्नमेट लॉ कालेज, बम्बई में लॉ के प्रोफेसर नियुक्त।
- मार्च, 1930 : नासिक के कालाराम मंदिर मे अछूतो को प्रवेशाधिकार दिलाने हेतु सत्याग्रह।
- दिसम्बर, 1930 साप्ताहिक 'जनता' का प्रकाशन
- 1932 : लंदन की 'गोलमेज सभा' के प्रतिनिधि नियुक्त।
- सितम्बर, 1932 ' रैमजे मैकडोनल्ड के कम्युनल एवार्ड मे अछूतों के पृथक निर्वाचन को त्याग कर महात्मा गांधी के साथ 'पूना पैक्ट' पर हस्ताक्षर, संयुक्त निर्वाचन स्वीकार।
- 1932–33 : इण्डिया कॉन्सटीट्यूशन रिफार्म' कमेटी के सदस्य मनोनीत
- जून, 1935 : गर्वनमेट लॉ कालेज, बम्बई के प्राचार्य नियुक्त।

- सितम्बर, 1935 : नासिक जिले के 'वाला' में 'हिन्दू धर्म' त्यागने की घोषणा।
- अगस्त, 1936 : 'इन्डीपेन्डेन्ट लेबर पार्टी' की स्थापनां।
- जनवरी, 1937 : बम्बई लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य निर्वाचित।
- अप्रैल, 1942 : 'आल इण्डिया शैड्यूल कास्ट्रस फेडरेशन' की स्थापना।
- जुलाई, 1942 : गर्वनर जनरल ऑफ इण्डिया की कार्यकारिणी परिषद् में श्रम मंत्री मनोनीत।
- अप्रैल 1945 : 'पीपुल्स एजूकेशन सोसाइटी' की स्थापना।
- 1947 : भारत के संविधान की 'ड्राफिटंग कमेटी' मे नियुक्ति।
- 1947 : नेहरू मंत्रिमण्डल में विधि मंत्री नियुक्त।
- नवम्बर 1948 : भारत के संविधान की 'ड्राफ्टिंग कमेटी' के अध्यक्ष के रूप में संविधान असेम्बली का मसवदा पेश।
- सितम्बर 1951 : 'हिन्दू कोड बिल' तथा अन्य मतभेदों के कारण 'नेहरू मत्रिमण्डल' से त्यागपत्र।
- मई 1952 : राज्यसभा की सदस्यता।
- अक्टूबर 1956 : नागपुर बौद्ध सम्मेलन में बौद्ध धर्म की दीक्षा।
- 6 दिसम्बर, 1956 : दिल्ली में अलीपुर रोड स्थित अपने निवास पर महा प्रयाण।

प्रमुख कृतियाँ एवं रचनाकाल

1. कास्ट इन इण्डिया (1916)
2. स्मॉल होल्डिंग्स इन इण्डिया एण्ड देयर रेमेडीज (1918)
3. द प्राब्लम ऑफ रूपी (1923)
4. एनिहिलेंशन ऑफ कास्ट (1935)
5. फेडरेशन वर्सेज फ्रीडम (1939)
6. रानाडे, गांधी एवं जिन्ना (1943)
7. कम्यूनल डेडलॉक एण्ड वे टू साल्व इट
8. व्हाट कांग्रेस एण्ड गांधी हैव डन टू अनटचेबल्स (1945)
9. पाकिस्तान एण्ड पार्टीशन आफॅ इण्डिया (1945)
10. स्टेट्स एण्ड माइनारिटीज (1947)
11. हिस्ट्री आफॅ इण्डियन करेन्सी एण्ड बैंकिंग (1947)
12. महाराष्ट्र ऐज ए लिंग्विस्टिक स्टेट (1948)
13. द अनटचेबल्स (1948)
14. थॉट्स ऑन लिग्विस्टिक स्टेट्स (1953)
15. हू वेयर शूद्राज ? (1954)
16. राइज एण्ड फाल ऑफ हिन्दू वूमेन
17. गोस्पेल ऑफ बुद्धिज्म
18. बुद्ध एण्ड हिज धम्म

हत्या करने के लिए ब्राह्मण 'महार' बना :

सभी तरह का तंत्र ब्राह्मण इस्तेमाल करते थे। बाबासाहब की हत्या करने के लिए ब्राह्मणों ने ऐसा भी पर्याय नहीं छोड़ा होगा। इसलिए बाबा साहब की ही भाषा में, 'Remember, Brahmins have a brain within brain!' (ध्यान रखें, ब्राह्मण के सिर में कई दिमाग रहते है अर्थात बहुत षड़यंत्र पकते रहते हैं) हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। और एक हत्या का प्रयास हिंदू कोड बिल के काल में किया गया। मगर शंकरानंद शास्त्री की सतर्कता से वे बचे। इसका वर्णन शंकरानंदशास्त्री के ही शब्दों में देखें– 'संविधान रचना के बाद प्रथम कानून मंत्री बाबासाहब ने संसद में हिंदू कोड बिल पेश किया। इस पर सार हिन्दु (ब्राह्मणी) जगत तिलमिला गया और बाबासाहब के विरूद्ध आन्दोलन खड़ा कर दिया। इसमें हिंदू साधू–संन्यासियों का बड़ा हाथ था। बाबासाहब की कोठी पर भी कई बार प्रदर्शन किए गए। कई बार असामाजिक हिन्दू तत्वों ने तिलक मार्ग, नई दिल्ली वाले बाबासाहब के निवासगृह में घुसने के अनेक प्रयत्न किये। तब लेखक (शंकरानंदशास्त्री) और बाबासाहब के सचिव श्री. पिल्ले के कारण उन दुष्टों के प्रयत्न असफल हो गए। उसी दौर में नागपुर का एक बामण, महार बनकर बाबासाहब की कोठी के सामने धरना देकर बैठा था बाबासाहब अपनी कार से पार्लमेंट को जाने के समय उन पर घातक आक्रमण करने की नियत को भाँपकर उसकी अच्छी पिटाई करके उसे स्थानीय पुलिस को सौंप दिया। इस प्रकार यह आक्रमण करने का प्रयास भी असफल रहा।

सन 1946 को भी कांग्रेस के कुछ गुंडों के मार्फत बाबासाहब पर हमला करने की योजना की गई थी। दिल्ली जंक्शन के सामने गांधी मैदान में (उस वक्त कंपनी बाग) सर स्टफर्ड क्रिप्स और लॉर्ड एमरी मिशन तीव्र निषेध करने के लिए दिल्ली शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन की ओर से विशाल महारैली का आयोजन किया था। सभा में गड़बड़ करके बाबासाहब पर हमला करने का षड़यंत्र कांग्रेस ने रचा था। किंतु शंकरानंदशास्त्री की सतर्कता के कारण समता सैनिक को इस पर सक्त पहरा रखने को लगाया गया था। प्रारंभ में समता सैनिकों दल की परेड ली गई। गुंडों ने वह सेना देखी और वह प्रसंग टला वे भाग गए। उस समय ये ऐसी घातपात की घटना के विरोध में समता सैनिक दलने, 'गांधी टोपी' की जाहिर होली जलायी।

हत्या के कई प्रकार होते है। हत्या का षड़यंत्र असफल रहा, वे पकड़े गए और घातपात नहीं इसलिये उसे हत्या नहीं करेंगे ऐसा कह नहीं सकते। अपराध शास्त्र में हत्या के कई प्रकार बताए गए हैं।

आय. पी. सी.–292 सदोष मनुष्यवध रहा है। ''मृत्यु घटकर लाने की उद्देश्य से या जिस कारण मृत्यु घटित होना संभव है ऐसी शारीरिक क्षती पहुँचाने की उद्देश्य से या किसी कृति के कारण कृत्य कारणीभूत होने का संभव है इसकी जानकारी होते हुए भी जो कोई ऐसी कृती करके मृत्यु का कारण होता है वह सदोष मनुष्यवध का गुनाह करता है।''

आय. पी. सी.–300 शारीरिक क्षती पहुंचना–सदोष वध, 307–खून का प्रयत्न करना इत्यादि।

डा. बाबासाहब आम्बेडकर को घातपात से मारने का षड़यंत्र रचा गया और उसके लिए विविध प्रयत्न भी किए गये यह उपरोक्त सबूतों के द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त जब बाबासाहब ने संविधान में ओबीसी के संवैधानिक हक अधिकारों का प्रस्ताव किया तब भी उन्हें आरक्षण दिया नहीं गया, ओबीसी के लिए आयोग निर्माण किया नहीं गया इसलिये बाबासाहब ने केंद्रीय मंत्रीमंडल का इस्तीफा दिया। ओबीसी के हक अधिकारों के लिए बाबासाहब ने इस्तीफा दिया यह जानकारी ब्राह्मणी मीडिया और ब्राह्मणी कृती की मंडली ने ढँक कर रखी। ओबीसी का मुद्दा अब टेकओव्हर करके एससी, एसटी, ओबीसी और धर्मपरिवर्तित मूलनिवासियों का एक देशव्यापी संघटन बनाने के हेतु से बाबासाहब दि. 6 नवम्बर, 1951 को पाटलीपुत्र में लाखों की संख्या में इकठ्ठे हुए ओबीसी को संबोधित करने जाते है। मगर नेहरू को इस कार्यक्रम की भनक लगते ही नेहरू बाबू जगजीवनराम को हाथ में लेकर और बाबू जगजीवनराम यह तो कांग्रेस के भाडे के टट्टू। वे फिर भोला पासवान शास्त्री को हाथ में लेकर अंधेरे का फायदा लेते बाबासाहब पर जोर जोर से पत्थर, ईटों से आक्रमण करते हैं आर. एल. चंदापूरी वह मार अपने शरीर पर सहन करते, बाबासाहब को बचाते हैं। वे इसमें जख्मी होते हैं। यह घटना क्या ऐसी ही है? क्या यह घटनाऐं महत्वहीन हैं? क्या यह हत्या का प्रकार नहीं? चंदापुरी इस घटना के बारे में कहते है की, **''मैंने जैसे ही महात्मा बुद्ध और सम्राट अशोक की पवित्र नगरी पाटलिपुत्र में आयोजित विराट ऐतिहासिक जन सभा को सम्बोधित करने के लिए डा. आम्बेडकर को आमंत्रित किया कि बिजली गुल कर दी गई। फिर जैसे ही भाषण देने के लिए डा. आम्बेडकर उठे कि उन पर ईट, पत्थर फेंके जाने लगे। मैं तत्काल उनकी रक्षा में सामने खड़ा हो गया। अचानक मेरी दाई आँख के पास एक कंकड़ आकर लगा और खून प्रवाहित होने लगा। मैंने हिम्मत की और दलितों, पिछड़ी जातियों और अल्पसंख्यकों के विशाल जनसमूह को ललकारते हुए कहा कि डा. आम्बेडकर को मारने का यह सरकारी षड़यंत्र है, वैसे ही बिजली आने के साथ स्थिति काबू में आ गई और भीड शांत हो गई। इस कुकर्म में कांग्रेस और उच्च जातियों (ब्राह्मणों) के गुण्डों के साथ बिहार सरकार का एक मंत्री (भोला पासवान शास्त्री) भी था।''**

उसके बाद भोला पासवान शास्त्री ने मरने के पूर्व इसकी जाहिर सभा में कबूली दी थी। उन्होंने नेहरू और जगजीवनराम के बताने पर महापुरूष बाबासाहब पर पत्थर फेंके। **'मैं मरते समय ये दुख (यह बात) अपने साथ लेके नहीं मरना चाहता!'** गांधी और कांग्रेस यह किस प्रकार षड़यंत्र करते थे, इसका यह जिन्दा सबूत है। आर.एल. चंदापुरी ने उनका आत्मचरित्र दि. 20 नवम्बर, 1996 को लिखा और उसमें यह घटना उद्घृत की है। आज भी कांग्रेसी लोग यह बात झूठ सिद्ध नहीं कर सके यह विशेष है। यह घटना देखें वैसी सीधी नहीं हैं उसका संदर्भ विश्लेषण के साथ आगे के अध्याय में चर्चित करना है। अभी इतना ही की, ब्राह्मण–बनिया अथवा युरेशियन लोगों ने डा. बाबासाहब आम्बेडकर की हत्या करने के सभी प्रकार से प्रयत्न किए। आखिर का प्रयत्न उन्होंने किया वह बहुत घिनौना था और उसके द्वारा ही बाबासाहब का काँटा निकल गया। वह कौन सा प्रयत्न था इस बारे में हम देखने वाले हैं।

साभार :
डा. बाबासाहब आम्बेडकर की हत्या किसने, क्यों और कैसे की?
पृ.सं. 105 से 107 तक।
प्रो. विलास खरात

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

मा. कांशीराम जी ने कहा

आत्मसम्मान

1. आजादी के चार दशकों के बाद भी तुम लोग जानवर की तरह ही रह रहे हो। अब आदमी बनने का मौका है। एक होकर उच्च जातियों के प्रभुत्व को उखाड़ फेंको।

समाज

1. हमारा मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में बुनियादी और संगठनात्मक बदलाव लाना है जो कि जातिप्रथा की बीमारी से ग्रस्त है।''

2. ''जिस समाज की गैर राजनैतिक जड़ मजबूत नहीं होती, उस समाज की राजनीति कभी कामयाब नहीं होती।''

भूमि सुधार

1. जीवन के बहुत से पहलू होते हैं। मैं सिर्फ सबसे महत्वपूर्ण पहलू को ले रहा हूँ– भूमि का शासन। जब अंग्रेज भारत से गये तो केवल 18% अनुसूचित जाति–जनजाति के लोग भूमिहीन थे, आज ये 30% हैं।

आत्मनिर्भर बनाने हेतु

1. हम सफलता के इतने पास हैं कि इसे महसूस कर सकते हैं। उसी क्षण हम सत्ता हासिल कर लेंगे जिस क्षण अनुसूचित जाति, जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यकों को यह मालूम हो जाएगा कि शासक और शासित में क्या अन्तर है।

2. हम सामाजिक परिवर्तन की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि सामाजिक लोकतंत्र के बिना राजनैतिक लोकतंत्र अधूरा है। यद्यपि हमारा संघर्ष सामाजिक है, लेकिन राजनैतिक शक्ति के बिना लोगों को समझाना कठिन होता है।

नेतृत्व

1. मैं दलितों के नेतृत्व के लिए दलित नेता ही चाहता हूँ। बाहर के नेता या उनके दलाल नहीं। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार के नेता उस कड़ी का हिस्सा होंगे जिसमें महात्मा फूले, छत्रपति साहू जी महाराज, ई.वी.आर. रामास्वामी, नारायणा गुरू तथा आम्बेडकर थे।

2. सरकार आरक्षण नीति को लागू करने में ईमानदार नहीं हैं। आजादी के 40 वर्ष बाद भी अनुसूचित जाति, व जनजाति का कोटा किसी भी क्षेत्र में पूरा नहीं हुआ है। संविधान में 3700 अन्य पिछड़ी जातियों का उल्लेख है और इनके उत्थान के विशेष प्रावधान हैं। इस प्रावधान के अन्तर्गत काका कालेलकर व मंडल आयोग नियुक्त किया गया लेकिन सरकार की मक्कारी के कारण ये दोनों रद्दी की टोकरी में पड़ी हैं।

3. अगर मैं साफ कहूँ तो मैं आरक्षण के विरूद्ध हूँ क्योंकि यह सिर्फ अल्पकालिक उपाय है। यह एक ऐसी बैसाखी है जो हमें बहुत दूर तक नहीं पहुँचने देगी। जो लोग सत्ता में हैं, वे हमें यह बैसाखी देकर खुश रखना चाहते हैं जिससे कि हम सत्ता की प्रतिस्पर्धा में न आएं।

4. आरक्षण हमारी मांग नहीं अपितु अधिकार है। आरक्षण भागीदारी का प्रश्न है।

5. अब वक्त आरक्षण मांगने का नहीं, देने का आ गया है।

6. मैं दलित शोषित समाज को देश का शासन करने के लिए तैयार कर रहा हूँ न कि नौकरियों और कालेजों में प्रेवश लेने के लिए।

7. बैसाखियां छोड़ो, दलित बनने की होड़ को कम करो और भविष्य का मुस्कराहट के साथ स्वागत करो।

8. आरक्षण नहीं होता तो संसद, विधानसभा में एक भी बहुजन दिखायी नहीं देता।

9. मैं अपने लोगों को इस प्रकार तैयार कर रहा हूँ, कि वे दूसरे को आरक्षण दें, न कि आरक्षण मांगे।

10. जब तक हम सत्ता में नहीं आते तब तक आरक्षण आवश्यक है। इसके बाद स्थिति भिन्न होगी। उदाहरण के लिए आज 4 प्रतिशत ब्राह्मण 40 प्रतिशत जिलादण्ड अधिकारी हैं। जबकि उनके लिए कोई आरक्षण नहीं है फिर भी वे सब आगे हैं क्योंकि वे लोग राज कर रहे हैं। जो राज करते हैं उन्हें आरक्षण की बैसाखी की आवश्यकता नहीं होती।

मैरिट योग्यता का अर्थ

1. जब अंग्रेजों ने राज किया था तो उनकी योग्यता के बारे में किसने पूछा था? दो प्रतिशत होने के बावजूद भी उनका कभी शोषण नहीं हुआ।

जाति प्रथा के प्रभाव

1. जो हम सब कुछ खुलेआम कर रहे हैं, वही दूसरे गुप्त रूप से करते हैं। भारत में जाति प्रथा कैंसर की तरह है, जो कि आपरेशन से पहले सामने लाई जानी चाहिए।

2. हम बहुत देर से इस व्यवस्था के दरवाजे खटखटा रहे हैं, न्याय मांग रहे हैं, पर कुछ नहीं मिल रहा। अब समय आ गया है कि हमें ये दरवाजे तोड़ देने चाहिए।

सामाजिक परिवर्तन में रूकावट

1. सामाजिक बदलाव नहीं होने के कारण। वर्तमान दल है, इसीलिए पिछड़ा वर्ग आगे नहीं बढ़ रहा है। इस ओर वामपंथी दल सर्वाधिक रूकावट पैदा करने वाले हैं। वे बदलाव की बात कर रहे हैं और काम यथस्थिति बनाए रखने का करते हैं। भाजपा बदलाव की बात कभी नहीं करती।

2. राजनीति सत्ता के लिए होती है तथा सत्ता बिना संघर्ष के नहीं मिलती।

राजनीति का अर्थ

1. मेरा मुख्य मकसद सामाजिक रूपांतरण और आर्थिक मुक्ति है। इसके लिए हमें शुरूआती तौर पर राजनीतिक प्रभाव चाहिए और अंतिम तौर पर राजनीतिक सत्ता चाहिए। डॉ. आंबेडकर ने कहा था कि राजसत्ता वह चाबियों की चाबी है जिससे हर ताला खुल जाता है।

2. मैं अपने प्रतिद्वंद्वियों को पूरी आजादी देता हूं कि वे बहुजन समाज को जितना बांट सकें, बांटें। लेकिन मेरा अधिकार है कि मैं उन्हें उनका हक दिलाने के लिए संगठित करूं।

पिछड़ा वर्ग

1. मैं उत्तरप्रदेश पर इसलिए केंद्रित करता हूं क्योंकि वह ब्राह्मणवाद का पालना है। अगर भारत को एक पुरूष के रूप में देखें, तो उत्तर प्रदेश उसकी गर्दन है। जब मैं गर्दन दबोचता हूं, तो शरीर के दूसरे अंग अपने आप निष्क्रिय हो जाते हैं और उन पर हमारा नियंत्रण कायम हो जाता है.... हम भारत सरकार को नियंत्रण से कम कुछ नहीं चाहते।

2. हमारे लिए कांग्रेस सांपनाथ और दूसरी विरोधी पार्टियां नागनाथ के बराबर हैं। बहुजन समाज सांपनाथ और नागनाथ से एक ही जैसा खतरा महसूस करता है। इस खतरे का मुकाबला करने के लिए देश का दबा–कुचला इंसान नेवलानाथ बनने की जरूरत महसूस करता है।

3. मुझे मजबूत नहीं, मजबूत सरकार चाहिए।.... हमें उस वक्त तक कमजोर केंद्र की जरूरत है, तब तक हम खुद कमजोर हैं।

वामपंथी दल का रवैया

1. वामपंथी लोग सदा यही कहते हैं कि हम क्रांति लाएंगे। वह क्रांति कब आएगी? क्या उसके लिए 70 वर्ष बहुत नहीं हैं? हम सात महीनों में क्रांति लाएंगे।

2. वे भी एक ब्राह्मणवादी ताकत हैं। शायद वे दूसरों से अधिक खतरनाक हैं क्योंकि वे बात बदलाव की करते हैं और काम सिर्फ यथास्थिति बनाए रखने के लिए हैं सभी कम्युनिस्ट पार्टियां ब्राह्मणों और ठाकुरों द्वारा नियंत्रित हैं।

राजनैतिक गठजोड़

1. सभी राजनैतिक लोग यथास्थिति के पक्षधर हैं। परिवर्तन नहीं चाहते, इसलिए हम उनसे तालमेल नहीं करते।

2. मैं छोटे–छोटे लाभों के लिए तालमेल नहीं करना चाहता, हमें कुछ लाभ होगा लेकिन वे अधिक मजबूत हो जायेंगे और दूसरे दलों की तरह मैं तालमेल की आदत भी नहीं डालना चाहता, उनका तालमेल के बिना काम नहीं चलता है।

3. हम कट्टरपंथियों के साथ, हाथ नहीं मिलाना चाहते।

4. मैं उन लोगों में पैदा हुआ हूँ जिन्होंने त्याग किया है, और पिछले 40 वर्षों के इतिहास में कोई भी ऐसा उदाहरण नहीं जो हमने देश को धोखा दिया हो। अगर कोई सी.आई.ए. का दलाल है तो वह ब्राह्मण बनिया या ठाकुर है।

5. मैं पिछड़ों को संगठित कर रहा हूँ जिससे उनकी हजारों वर्षों की लाचारी दूर हो सके। मैं दुनिया के सर्वाधिक टूटे लोगों को जोड़ रहा हूँ जिससे वे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें।

6. मैं किसी को भी चुनौती नहीं देने दूंगा। जो मेरा विरोध करेगा उसे मैं नेतृत्व सौंप कर पीछे हट जाऊंगा। प्रश्न काम कर के दिखाने का है। मैं मोरारजी देसाई जैसा नहीं बनना चाहता, जिसे सदा यही भय रहता था कि राजनायण, चरणसिंह व अन्य लोग क्या कर रहे हैं। हमें अन्तिम उद्देश्य पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

7. मैं कभी भी समाचार पत्रों में की गई टिप्पणियों का उत्तर नहीं देता।

8. मैं बसपा को इस प्रकार बना रहा हूँ कि वह शीघ्र सत्ता में आएगी और हजारों वर्ष तक सत्ता में रहेगी।

मेरी जिन्दगी का उद्देश्य

1. सामाजिक परिवर्तन हमारा प्रमुख लक्ष्य है।

2. हमारा अन्तिम उद्देश्य भारत पर शासन करना है।

3. सामाजिक लोकतन्त्र स्थापित करना ही मेरा जीवनलक्ष्य है।

4. बहुजन समाज को हुक्मरान समाज बनाना मेरी जिन्दगी का मकसद है।

5. बहुजनों की सत्ता लाकर हम इस देश को सोने की चिड़िया बनायेंगे।

6. मांगने वाला नहीं, देने वाला समाज बनाना ही मेरा लक्ष्य है।

मनुवाद के खात्मे के लिए मा. कांशीराम जी का आह्वान

1. मनुवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने का वक्त आ गया।

2. हमारा मिशन मनुवाद रहित मानवतावादी समाज का निर्माण करना है।

3. मनुवादी समाज व्यवस्था जाति के आधार पर लोगों को तोड़कर 'बहुजन' से 'अल्पजन' बनाने वाली मूवमेन्ट है।

4. बसपा को छोड़ सभी पार्टियां मनुवादी व्यवस्था को टिकाये रखना चाहती है।

5. 'मनुवाद' हटाकर 'मानवतावाद' लाना है।

6. बहुजन समाज मनुवादियों का पिछलग्गूपन छोड़ें।

7. बसपा का मुख्य काम मनुवादी समाज व्यवस्था का खात्मा करना है।

8. जिनको मनुवादी पार्टियों ने नेगलेक्ट किया है, बहुजन समाज पार्टी उनको सलेक्ट करती है।

9. अपने सीमित साधनों से मनुवादी भ्रष्टाचारियों का मुकाबला कर आगे बढ़े।

10. मनुवादी पार्टियों के खत्म होने के साथ ही मनुवादी प्रेस भी खत्म हो जाएगी।

11. बहुजन समाज के जागरूक होने पर मनुवादी शासकों की कुर्सी हिलने–डुलने लगी है।

मनुवादियों की साजिश

1. मनु सिद्धांत मानवतापूर्ण और समतामूलक समाज की स्थापना में रोड़ा।

2. बहुजन समाज का हित बर्दास्त नहीं कर पा रहे हैं मनुवादी।

3. कोई भी दल बहुजन समाज के हित में नहीं है।

4. मनुवादी लोगों ने बहुजनों को बड़ा ठगा है।

5. बहुजनों की दुर्गति का कारण मनुवादी समाज व्यवस्था है।

बहुजन समाज बनाने की संकल्पना

1. बहुजन समाज देश की एकमात्र शक्ति, अगर हम 6000 जातियों में तोड़े गये बहुजन समाज में आपस में समझौता करके भाईचारा बनाकर संगठन बना लेते हैं तो सभी अन्य पार्टियां दे खुद ही खत्म हो जायेंगी।

2. हमें तोड़े हुए समाज को जोड़कर बहुजन समाज बनाना है।

3. अब समय आ गया है कि हम शक्ति का परिचय दें।

4. हमने हजारों जातियों के टुकड़ों को जोड़कर अल्पजन से बहुजन बनाया।

5. अल्पजन से बहुजन बनाने का काम बसपा ने ही किया।

6. हमारा अब तक का संघर्ष बहुजन समाज को मजबूत समाज बनाने का रहा।

7. बसपा ही बहुजनों को सत्ता के करीब लायी।

8. बहुजन समाज का आपस में भाईचारा बनाना ही सबसे बड़ा समझौता।

वोटों की शक्ति का अहसास कराने हेतु

1. बैलेट शक्ति बुलैट से ज्यादा ताकतवर होती है।

2. हम 'बैलेट' (वोट) की ताकत से ही इस देश के

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

हुक्मरान बन सकते हैं।
3. वोट का सदुपयोग कर बहुजन समाज अपनी बात आगे बढ़ाएं।
4. बहुजन समाज अपने वोट की सुरक्षा करने को आगे आएं, तभी अपने सही प्रतिनिधि भेज सकेंगे।
5. 'वोट' बहुजन समाज का सबसे बड़ा हथियार है।
6. नोटों वालों को पछाड़ कर वोटो वालों की बात को आगे बढ़ायें।
7. स्थिर सरकार नोट वाले नहीं, वोट वाले ही दे सकते हैं।
8. 35 फीसदी वोट पाकर 85 फीसदी वोटों वाले बहुजन समाज की अपने बूते पर सरकारें बन सकती हैं।
9. वोट के अधिकार से हम दूसरे सभी अधिकार हासिल कर सकते हैं।

हुक्मरान समाज की स्थापना हेतु संकल्पनाएँ

1. बहुजन समाज को इस देश का हुक्मरान बनाना अत्यंत जरूरी है।
2. बहुजन समाज अपने में लीडरशिप की क्वालिटी पैदा कर आगे बढ़ें।
3. हमारा संघर्ष बहुजनों को हुक्मरान बनाने के लिए हैं।
4. मैं अपने देश में बहुजनों का राज देखना चाहता हूँ।
5. बहुजन समाज हुक्मरान बनकर अपनी समस्याओं का समाधान खुद करें।
6. बहुजन समाज को 'हुक्मरान समाज' बनाना हमारा पहला लक्ष्य है।
7. बहुजन समाज को अब हुक्मरान समाज होने से कोई नहीं रोक सकता है।
8. 85 प्रतिशत हमारा आखिरी निशाना लेकिन हुक्मरान बनने के लिए 51 ही काफी है।
9. बहुजन समाज को हुक्मरान समाज बनाना होगा।
10. हुक्मरान जमात पर कभी कोई अन्याय–अत्याचार नहीं होते हैं।
11. बहुजन समाज को हुक्मरान समाज बनाना मेरी जिन्दगी का मकसद है।
12. बहुजन समाज देश की बागडोर अपने हाथों में लेने को तैयार हो।
13. हुक्मरान बनने के लिए 'बहुजन' बनाना होगा।
14. हम बहुजन समाज को इस देश का हुक्मरान समाज बनाकर दिखायेंगे।
15. हम बहुजन समाज को इस देश का हुक्मरान समाज बनायेंगे।
16. बहुजनों की सत्ता लाकर हम इस देश को सोने की चिड़िया बनायेंगे।

भूख से बचाना

1. हमारी सरकार में किसी को घास नहीं खानी पड़ेगी सबको अन्न मिलेगा।

साक्षरता पर जोर

1. हम समाज के किसी इन्सान को अज्ञान नहीं रहने देगें।
2. कामयाबी हासिल करने के लिए समाज को आशावादी बनाना होगा।
3. समाज के मुर्दापन को दूर कर शासक बनाना है।
4. अब अपनी कमजोरी दूर करके गुलामी का अन्त करें।

बहुजन समाज के मान सम्मान के लिए

1. हमारा मूवमेन्ट बहुजन समाज के मान–सम्मान और स्वाभिमान के लिए है।
2. बहुजन समाज की निर्भरता का अन्त हमें ही करना होगा।
3. बहुजन समाज अब डर–डर कर जीना छोड़े और अपनी शक्ति को पहचाने।
4. बहुजन समाज दूसरों के नहीं अपने भरोसे के साथ आगे बढ़ें।
5. बहुजनों की समस्याओं के हल के लिए बहुजन की सरकार बनायें।
6. हमारा प्रथम उद्देश्य केवल ताकत पाना ही नहीं, अपितु सम्मान पाना भी है।
7. हमें लोग समानता और आत्मसम्मान के लिए लड़ रहे हैं।

अनुपातिक भागीदार पर जोर

1. जिसकी जितनी संख्या भारी–उसकी उतनी भागीदारी।
2. समाज से 52 प्रतिशत पिछड़े वर्ग के लोग है जिन्हें देश के कारोबार में इसी अनुपात में भागीदारी मिलनी चाहिए।

सांगठनिक शक्ति के विषय में

1. बिना मजबूत संगठन के कोई लड़ाई जीती नहीं जा सकती।
2. मजबूत संगठन ही लक्ष्य प्राप्ति का एकमात्र आधार है।
3. संगठन शक्ति बनाकर अपनी हर मुश्किल और मुसीबत का अंत कर सकते हैं।
4. संगठन और शक्तिशाली समाज पर कोई जुल्म ज्यादती करने की हिम्मत नहीं कर सकता।
5. देश में कोई शक्ति है तो वह बहुजन समाज की है।
6. कमजोर वर्ग की सबसे बड़ी शक्ति उसका संगठन और भाईचारा है।

सामाजिक आर्थिक, एवं राजनैतिक परिवर्तन की आवश्यकता

1. बिना बदलाव के बहुजन समाज को इस देश में मान–सम्मान, बराबरी का दर्जा, न्याय एवं शासन–प्रशासन में भागीदारी नहीं मिल पाएगी।
2. अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए परिवर्तन की लहर को आगे बढ़ाये।
3. व्यवस्था परिवर्तन के लिए समाज को ज्ञानवान बनाना जरूरी हैं।
4. सारे देश में 'परिवर्तन' वाला संगठन तैयार करना है।
5. सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक मुक्ति आंदोलन को सफल बनायें।
6. समाज परिवर्तन हमारा प्रमुख लक्ष्य।
7. बसपा एक आन्दोलन है जिसका लक्ष्य व्यवस्था परिवर्तन।
8. हम राजनीति का प्रयोग सामाजिक परिवर्तन के लिए करना चाहते हैं।

सच्चे लोकतंत्र के विषय में

1. पोलिटिकल डेमोक्रेसी, सोशल डेमोक्रेसी के बिना कामयाब नहीं।
2. सामाजिक और आर्थिक गैर बराबरी को दूर करना हमारा लक्ष्य है, जबतक यह दूर नहीं होगा हमारा आंदोलन जारी रहेगा।

गाँधी जी के विषय में

1. गाँधी जी ने हमारे समाज को चमचा बनाकर रख दिया।
2. गाँधी जी हर समस्या की जड़ थे, मैं बदलाव चाहता हूँ, डॉ. आम्बेडकर भी बदलाव चाहते थे, लेकिन गांधी जी सामाजिक यथास्थिति के संरक्षक थे। वे शूद्रों को शूद्र ही बनाए रखना चाहते थे। हम देश को जोड़ना चाहते हैं और कृत्रिम विभाजनों को मिटाना चाहते हैं।

निर्धन समाज को सलाह

1. निर्धन समाज को धनवानों का मुकाबला करके आगे बढ़ाना होगा।
2. निर्धन समाज की पार्टी बनाकर धनवानों का मुकाबला करके हम आगे बढ़े हैं।
3. निर्धन समाज को धनवानों से मुकाबला करने के लिए छोटे साधनों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करना होगा।

अच्छे कार्यकर्त्ता के विषय में

1. जहाँ कार्यकर्त्ता मिशनरी होते हैं, दुःख उठाने में सक्षम होते हैं, वहाँ पर कार्य तेजी से बढ़ता है।

जी महिला चेतना पर

1. हमारी पार्टी महिलाओं को 33 प्रतिशत की बजाय 50 प्रतिशत आरक्षण देने की पक्षधर हैं, बशर्ते...
2. बहुजन समाज सावित्रीबाई फूले के संघर्षों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े।

जातिवाद पर

1. मैं जातिवाद को खत्म करना चाहता हूँ।
2. अभी तक हम उच्च जातियों से आशा करते थे कि वे जाति प्रथा खत्म करेंगी। लेकिन वे ऐसा क्यों करेंगे, वे इससे सर्वाधिक लाभान्वित हैं, इसलिए जातिवाद खत्म नहीं हो रहा है। यह तभी सम्भवं होगा जब जातिप्रथा के शिकार दलित लोग स्वयं को संगठित करके इस व्यवस्था को उखाड़ फेंकेगे।
3. कास्ट के बारे में कोई कुछ नहीं बोलता है। तो कास्ट के बारे में मैं बोलना चाहूँगा।
4. जातिविहीन समाज की स्थापना के लिए आपको देश का हुक्मरान बनाना होगा।
5. बहुजन समाज खुद को जाति आधार पर बांटने की साजिशों से सावधान रहे।
6. हम आत्म सम्मान के लिए तभी सोच पायेंगे जब उच्च जाति और निम्नजाति का भेद खत्म हो जायेगा।

भ्रष्टाचार के खात्मे हेतु

1. भ्रष्टाचार के खात्मे के लिए भ्रष्टाचार में लिप्त अमीरों की पार्टीयों को सत्ता से हटाना होगा।
2. राजनीति के आधार पर समाज की पूरी मूवमेन्ट आगे बढ़ती है।
3. बहुजन समाज के हितों की रक्षा के लिए भ्रष्टाचार का खात्मा जरूरी।

अवसर को पहचानकर लाभ उठाने की सलाह

1. हर चुनाव को हमने, एक अवसर माना और हर अवसर का फायदा उठाने की हमने कोशिश की।
2. हमें हर 'अवसर' का फायदा लेकर आगे बढ़ते रहना होगा।
3. अच्छे परिणामों के लिए कुछ खास प्रबन्ध जरूरी।
4. अवसरवादी होना क्या बुरी बात है? आखिर दलितों को सदियों से अवसर मिले ही कहाँ हैं?

शिक्षित कर्मचारियों को दिशा–निर्देश

1. शिक्षित कर्मचारी योगदान कर बहुजन समाज को आत्मनिर्भर बनायें।
2. सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन आन्दोलन में कर्मचारी/अधिकारी बिना संगठन के योगदान कर सकते हैं।
3. पढ़े लिखे कर्मचारी समाज को जागरूक करने का फर्ज निभाए।
4. दलित–शोषित समाज का पढ़ा–लिखा वर्ग अपने समाज की समस्याओं को सुलझाने के लिए आगे आयें।

अल्पसंख्यकों के प्रति

1. मैं मुसलमानों का विरोधी नहीं हूँ।
2. अकलितय (अल्पजन) को अक्सरीयत (बहुजन) में तब्दील करके उन्हें हुक्मरान बनाना हमारा लक्ष्य है।
3. मुसलमान बहुजनों के साथ मिलकर मनुवाद का मुकाबला करें।
4. बहुजन समाज और धार्मिक अल्पसंख्यक समाज आपस में भाईचारा बनाकर अपने हितों की रक्षा खुद कर सकते हैं।
5. बसपा दलितों–पिछड़ों व मुस्लिमों को एक सूत्र में बांधेगी।
6. यह विद्रोह तभी कामयाब हो सकता है जब तक अलग–अलग जाति के दलित और वंचित लोग एक नहीं हो जाते।
7. मुझे उस दिन का इंतजार है जब दलित लोग, मुसलमानों के बारे में, और मुसलमान दलितों के बारे में सोचना शुरू करेंगे।

बाह्मणवाद

1. मैं ब्राह्मणवाद के खिलाफ हूँ।

स्वावलम्बी बनने हेतु

1. मांगना छोंड़े, हासिल कर देने वाला बनें।
2. मांगने की आदत छोड़ें और बहुजन बनकर देने वाला समाज बने।
3. वह दिन दूर नहीं, जब बहुजन समाज मांगने वाला नहीं देने वाला समाज होगा।
4. न बिकने वाला समाज तैयार करके ही हम यहाँ तक पहुँचे।
5. हमने न बिकने वाला समाज बनाया।
6. बहुजन समाज न बिकने वाले नेता पैदा करे।
7. न बिकने वाला समाज ही, न बिकने वाले नेता पैदा कर सकता है।
8. मैं हर तरह अस्थिरता चाहता हूँ ताकि बहुजन समाज जल्दी से सत्ता में हिस्सेदार बन सके।

बहुजन समाज को उसकी ताकत का अहसास कराना

1. सभी दलों की ताकत बहुजन समाज है।
2. 85 प्रतिशत बहुजन समाज पर 15 प्रतिशत मनुवादी शासन नहीं कर सकते।
3. लोकतंत्र में बहुजन को नकारा नहीं जा सकता।
4. शासन–प्रशासन में भागीदारी के लिए पिछड़ा वर्ग संगठित हो।
5. हमें अपना विकास करना होगा। हमें साबित करना होगा कि हम बाबा आम्बेडकर की संतान है।

डॉ. अम्बेडकर आन्दोलन के विषय

1. अम्बेडकर मूवमेन्ट केवल कुछेक जातियों का नहीं, बल्कि पूरे बहुजन समाज का मूवमेन्ट है।
2. सांसद, विधायक और मंत्री बनने से ज्यादा जरूरी है, बाबा साहब अम्बेडकर के मिशन को चलाना।
3. अम्बेडकर को अपनाकर हम शासनकर्ता जमात बन

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

सकते हैं।
4. बाबा साहब के उपकार और संघर्ष के कारण हमारे समाज की बात आगे बढ़ी।

प्रचार और मीडिया पर

1. बहुजन समाज के लोग जानकारी का फायदा लेकर समाज की कमजोरी दूर करें।
2. बहुजनों के मुवमेन्ट को बढ़ाने के लिए बहुजनों का अपना मीडिया हो।
3. प्रसार माध्यम के क्षेत्र में भी हमें आगे आना चाहिए।
4. अब देश का कारोबार फूले–शाहू और अम्बेडकर विचारधारा के आधार पर ही चलेगा।
5. फूले–शाहू–अम्बेडकर की विचारधारा से ही हम शासनकर्ता जमात बना सकते हैं।
6. फूले–शाहू अम्बेडकर को मानने वाला समाज तैयार करने के लिए मैं संघर्षरत हूँ।

संघर्ष के विषय में

1. संघर्ष के लिये पहले खोना पड़ता है, लेकिन उस संघर्ष से आने वाली पीढ़ियों के लिए लम्बे अर्से तक का रास्ता आसान हो जाता है।

महापुरूषों के प्रति सम्मान

1. भक्ति काल में गुरू रविदास, संत कबीर आदि महापुरूषों ने मनुवादी विचारों का विरोध किया।
2. महापुरूषों की बात को आगे बढ़ाकर ही समाज को आगे बढ़ा सकेंगे।
3. अपने महापुरूषों के संघर्षों के कारण ही हम यहां तक पहुंचे।
4. बहुजन समाज अपने महापुरूषों का अपमान नहीं सहेगा।
5. गुरू घासीदास बाबा के सपनों को साकार करना मेरे जीवन का अहम् हिस्सा।
6. बहुजन समाज के महापुरूषों के कारवां को आगे बढ़ाना हमारा मुख्य लक्ष्य।
7. अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पांच छः सौं वर्षो से ज्यादा पीछे जाने की जरूरत नहीं।
8. अपने महापुरूषों के कारवां को मंजिल तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य।
9. हमारे महापुरूषों के संघर्षों के कारण आज देश में बड़ा भारी परिवर्तन आया है।
10. महापुरूषों की बातों पर अमल करने से ही मूवमेन्ट बढ़ेगी।
11. हमारे महापुरूषों का संघर्ष समाज व्यवस्था की बराबरी के लिए था।

इतिहास का विचार

1. दुश्मन शासकों ने मूलनिवासी शूद्रों का इतिहास छिपाने की कोशिश की।
2. इतिहास बनाने की चाहत रखने वालों को इतिहास से सीख लेना जरूरी है।

आदिवासियों के प्रति चिन्तन

1. मेरी तमन्ना है कि आदिवासी समाज के जागरूक लोग बहुजन की मुख्यधारा में आये।
2. राजनीतिक चेतना के अभाव के कारण आदिवासी क्षेत्रों का विकास नहीं हुआ।
3. नेतृत्व क्षमता के विकास से ही आदिवासी समाज आगे बढ़ सकेगा।
4. आदिवासी समाज अपने में नेतृत्व पैदा कर आगे बढ़ें।

वर्ग संघर्ष के विषय में

1. वर्ग संघर्ष छिड़ने के डर से मैं चुप नहीं रहूँगा।

संविधान समीक्षा पर

1. संविधान को बदलने की योजना देश में सवर्ण मनुवादी समाज के जाति आधारित अन्यायी अत्याचारी राज को पुर्नस्थापित करने का षड़यत्र।
2. वर्तमान संविधान शूद्र और अतिशूद्र समाज के महापुरूषों का 200 साल का संघर्ष है।
3. भारतीय संविधान हमारे महापुरूषों के संघर्ष का निचोड़ है।

बौद्ध धर्म से सम्बन्धित

1. बाबा साहेब का ''बौद्धमय भारत'' बनाने का सपना भी हम पूरा करेंगे।
2. बौद्धमय भारत के दिशा में हमारा आंदोलन।
3. यदि बौद्ध धर्म को आगे बढ़ाना है, तो जाति को बौद्ध धर्म से दूर रखना जरूरी है।
4. हमारा लक्ष्य बहुजनों को शासनकर्ता जमात और भारत को बौद्धमय बनाना।

साभार :
बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम स्मृति ग्रंथ
पेज संख्या 44 से 54 तक
एस.एस.गौतम

ईश्वर की खोज

निर्माता और निर्माण

जैसे कुम्हार बर्तन बनाता है, जुलाहा कपड़ा बुनता है, मेमार मन्दिर बनाता है, इसी प्रकार सृष्टि की प्रत्येक वस्तु को बनाने वाला कोई होना चाहिए। साधारण व्यक्ति इसी प्रकार सोचता है। ईश्वरवादियों का यह भी कहना है कि जो कुछ भी बनाया गया है वह सब किसी न किसी उपयोग के लिए बनाया गया है। जैसे–खरबूजे में धारियाँ होती हैं तो वह इसलिए बनायी गयी कि बंटवारा करने में आसानी रहे। नाक इसलिए बनायी गयी ताकि उस पर चश्मा लगाया जा सके। जहाँ तक बनाने वाले का सवाल है, सृष्टि के अध्ययन में, बनने का कारण तो है। कौन चीज कैसे बनती है, क्यों बनती है। पदार्थ का रूप नाना प्रकार की वस्तु में कैसे बदल जाता है। इस सबके लिए तो प्रकृति के अनेक नियमों की खोज की गयी है और जब उन नियमों में विघ्न पड़ता है तो बनावट भी बिगड़ जाती है। जैसे स्त्री के अण्डे और पुरूष के शुक्राणु के मिलने से बच्चे का जन्म होता है। स्त्री के अण्डे और पुरूष के शुक्राणु में सूरत शक्ल और शरीर की बनावट तथा रूप रंग बनाने के लिये जीन नामक अणु होता है। वह जीन भोजन में से, बढ़िया प्रोटीन लेता है। अनेक रासायनिक इन्जीनियरों (आर० एन० ए०) को जन्म देता है। जो शरीर की ठीक रूप से बना देते हैं। माता के गर्भ में दवाई, भोजन या अन्य गलत आधारों के कारण उस इन्जीनियर के काम में बाधा पड़ती है तो बच्चे के शरीर में विकृति आ जाती है। पाँच से अधिक उँगली हो जाना, पैर मुड़ जाना, शरीर के किसी भी हिस्से में विकृति आ जाती है। औसतन प्रति एक हजार बच्चों के पीछे छः बच्चे विकृति से पैदा होते हैं। जो उपचार से ठीक हो जाते हैं। ईश्वरवादी कहेगा कि भगवान बनाने वाला था उसकी लीला है। उसने बच्चों को ऐसा बना दिया। वैज्ञानिक कहेगा कि गर्भ के दिनों में माता–पिता ने अमुक प्रकार भूल की है। अतः इनके बनने में विकृति पैदा हो गयी। जो अब इस प्रकार का उपचार करने से ठीक हो जायेगी। करोड़ों बच्चों के पीछे एक बच्चा ऐसा भी होता है जिसकी विकृति बहुत असाधारण होती है। जैसे–अमेरिका में दो बच्चे एक ही खोपड़ी के पैदा हो गये। सिर उनका ऐसा जुड़ा था कि दोनों का सिर एक ही प्रतीत होता था। संयोग से दोनों के दिमाग अलग–अलग थे इसलिए खोपड़ी का आपरेशन करके उन्हें अलग–अलग कर दिया गया भारत में ऐसा बच्चा पैदा हुआ है जिसके दोनों पैर और पेट तो एक है परन्तु ऊपर के धड़ और सिर दो हैं। दोनों मुँह से उसने दूध पिया और कुछ दिन जिन्दा रहा फिर मर गया। उसको असाधारण समक्ष ईश्वरवादियों ने उसे भगवान का अवतार घोषित कर दिया और पूजा करने लगे। गर्भ में दो अण्डों से अलग–अलग दो बच्चे बनने की बजाय शुरू की अवस्था में दोनों का नीचे का हिस्सा जुड़कर एक हो गया। अतः बच्चा बनने में विकृति आ जाने का कारण बताया गया है। अभी विज्ञान इतना विकसित नहीं हुआ कि वह गर्भ में इस प्रकार की विकृतियों का पता लगाकर उन्हें ठीक कर सके। परन्तु इस दिशा में खोज हो रही है। सृष्टि के निर्माण करने वाला ईश्वर तो अभी तक, न कहीं पकड़ा गया, न कहीं साबित हुआ और उसकी आवश्यकता प्रतीत हुई। परन्तु यह सब निर्माण कैसे होता है इसका पता अब मानव ने चला लिया है।

सभी वस्तुयें उपयोग के लिये बनायी गयी हैं। तो जरूर कोई समझदार बनाने वाला होगा, जो लोग ऐसा कहते हैं, वह यह भूल जाते हैं मानव विवेकशील प्राणी है। वह हर परिस्थिति का प्रयोग करना जान जाता है। वह पृथ्वी पर चलना, कूदना और दौड़ना सीखता है। तो कोई ईश्वरवादी यह कह सकता है कि ईश्वर ने पृथ्वी में इतनी मात्रा में आकर्षण शक्ति पैदा की है कि आदमी आसानी से चल–फिर सकता है। यह पृथ्वी मानव जब चाँद पर गया तो वहाँ पृथ्वी से छह गुना कम आकर्षण शक्ति मिली। इसलिए जितनी शक्ति साधारण चलने में मनुष्य पृथ्वी पर लगता है उतनी शक्ति लगाकर जब उसने चाँद पर चलना चाहा तो वह चलने की बजाय, दौड़ने और कूदने लगा तथा छोटे बच्चों के समान गिरने लगा। जब कभी आदमी बृहस्पति ग्रह पर पहुँचेगा तो उसे चलना–फिरना इसलिए सम्भव न हो पायेगा क्योंकि बृहस्पति ग्रह की आकर्षण शक्ति इतनी अधिक है कि पैर को उठाने में ही बहुत शक्ति लगानी पड़ेगी। जैसे चुम्बक लोहे को पकड़ लेता है। ऐसे ही बृहस्पति ग्रह आदमी को पकड़ लेगा। ईश्वरवादी कहेगा कि ईश्वर ने केवल पृथ्वी ही आदमी के रहने के लिए बनायी है। वैज्ञानिक कहेगा कि अकेली आकर्षण शक्ति ही नहीं अन्य लाखों बातें भी हैं जो अलग–अलग ग्रहों में भिन्न–भिन्न हैं। अकेली पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिसकी भौतिक दशा पेड़–पौधे और जीव–जन्तुओं के पनपने के लिए अनुकूल है। दो सौ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर भौतिक दशा प्रतिकूल थी। इसलिए कोई पेड़–पौधा और जीव–जन्तु इस पृथ्वी पर नहीं था। जब आदमी पहाड़ पर चढ़ता है तो जहाँ छोटा सा गड्ढा भी मिलता है, वहाँ पैर जमा देता है, जो पत्थर आगे को निकला मिलता है उसे पकड़ लेता है। इसका यह मतलब हरगिज नहीं है कि किसी ईश्वर ने पहाड़ की वह बनावट आदमी के चढ़ने के लिए बनायी है, वरन इसका अर्थ है कि आदमी पहाड़ की इस बनावट का अपनी विवेक बुद्धि से अधिकतम उपयोग करना जानता है। जिस युग में जितना ज्ञान मानव ने प्राप्त किया है उसी प्रकार के लक्ष्य और साधन उसने अपनाये हैं। कभी आदमी यह समझता था कि बीस की लकड़ी भगवान ने मानव के लिए लाठी रूपी हथियार हेतु पैदा की है। आज उसके हथियार बदल गये, मकान बदल गये, आवागमन के साधन बदल गये। उसके जीवन का पूरा रहन–सहन बदल गया। पाँच सौ साल पहले जैसा आदमी था आज उससे भिन्न मानव है। अगर हर चीज आदमी को ध्यान में रखकर बनायी गयी थी तो शुरू से अन्त तक एक ही प्रकार की सुख–सुविधायें और उपभोग, मानव के लिए ईश्वर द्वारा लगातार बनाया जाना चाहिये। परन्तु ऐसा है नहीं, कोई ईश्वर मानव की आवश्यकता के लिये, इस सृष्टि में कुछ भी पैदा नहीं करता। वरन् जो कुछ इस सृष्टि में पैदा होता है, मानव उसे विवेक बुद्धि से भोगता है। आदमी की कोई मौलिक आवश्यकतायें नहीं हैं। उसके ज्ञान के अनुसार उसकी आवश्यकतायें घटती और बढ़ती हैं। आज के युग में भौतिकी, गणित, इलेक्ट्रानिक्स, खगोल शास्त्र आदि अनेक दिशाओं में विज्ञान ने जितनी प्रगति की है उसी के हिसाब से मानव की आवश्यकताओं ने जन्म लिया है। पंखा, ठण्डी अलमारी, फोटो कैमरा, ट्राँजिस्टर, टी० वी० आदि की आवश्यकताओं में शामिल हो गये हैं।

साभार : चौ० महाराज सिंह भारती पूर्व सांसद
पृष्ठ संख्या 23 से 26 तक

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

कुशल बनो। उत्पादन करो।। अधिकारों के लिए संघर्ष को तैयार रहो।।।

मानवता को वापस भुगतान करें
Pay back to humanity
कुछ भी संभव है
अगर आपको खुद पर विश्वास है

रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारी महासंघ ट्रस्ट

Defence And Multiple Civilian Employee Federation Trust

पंजीयन सं० 34 दिनांक 18/10/2023

भारतीय न्यास अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत

कार्यक्षेत्र समस्त भारत

–: पंजीकृत कार्यालय –

ग्राम व पोस्ट – रिवई (सुनैचा)
थाना – कबरई, जिला महोबा (उ० प्र०)
मो०: 7839007418
E-mail : damceftrust@gmail.com
Website : www.dbindia.org.in

–: प्रदेश कार्यालय उत्तर प्रदेश :–

म० न० 50B, तुलसी नगर
नियर पी० ए० सी० गेट
श्याम नगर, कानपुर (उ० प्र०)
मो०: 9506623779

प्रदेश प्रभारी

बीरबल वर्मा

मो०: 9936429765

लक्ष्य – रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारियों और अधिकारियों की समस्याओं से भारत सरकार एवं सभी सम्बन्धित राज्य सरकारों विभागों को अवगत कराना और उनके निराकरण हेतु कानून बनवाने आदि की मांग करना।
रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारियों और अधिकारियों के सहयोग से वंचित, पीड़ित, शोषित प्राणियों के कल्याण हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु तत्पर रहना।
शिक्षा – निःशुल्क शिक्षा हेतु भारत के प्रत्येक जिले में विभिन्न स्तर की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना और संचालन करना।
स्वास्थ्य – चिकित्सा सेवाएं निःशुल्क प्रदान करवाना और चिकित्सालयों की स्थापना करना।
सामाजिक सुरक्षा – व्यक्तियों के संकट के समय, जन्म, मृत्यु या विवाह में होने वाले अतिरिक्त व्यय की पूर्ति के लिए लाभ प्रदान करना है।
रक्षा – रक्षा में लगे कर्मचारियों व उनके परिवार से है।
और – सभी
विभिन्न नागरिक कर्मचारी – संगठित और असंगठित क्षेत्र में कार्यरत कार्मकारों से हैं। (सशस्त्र बलों में कार्यरत कर्मचारियों को छोड़कर)
महासंघ – भारत के नागरिकों का संगठन से है।
ट्रस्ट – विश्वास/भरोसा है।

उस संगठन को दान दें
जिस पर आप विश्वास करते हैं
Make Donations to
an Organization You Believe In

–: उद्देश्य :–

- लक्ष्य की पूर्ति हेतु पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं की नियुक्त करना आदि।
- संचालित शिक्षण/प्रशिक्षण संस्थाओं में गरीब बच्चों को शिक्षण हेतु प्रवेश दिलाना और उनका खर्च वाहन करना।
- रोजगार के सृजन के लिए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना/संचालन करना आदि।
- भारतीय संविधान निर्माता बाबा साहब डा० अम्बेडकर के विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करने वाले नागरिकों को ''डा० अम्बेडकर विचार प्रचार रत्न'' से सम्मानित किया जाना।
- प्राकृतिक चिकित्सा और योग के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करना आदि।

अतः आप सभी भारत के नागरिकों से अपील है कि तन, मन, से सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

निवेदक –

सियाराम

राष्ट्रीय संयोजक/न्यासी, **मो०: 9454923394**

अनिल कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम)
मो०: 8593630338, 07897757223
श्रीमती उमेश्वरी देवी
राष्ट्रीय संयोजक (मुद्रण एवं संचार)
मो०: 9005204074, 8756157631
मनोज कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (बेसिक शिक्षा विभाग)
मो०: 8787010365
पंकज कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (माध्यमिक शिक्षा विभाग)
मो०: 7906006187
लेखचन्द्र गुप्ता
राष्ट्रीय संयोजक (खेल)
मो०: 9235728318
अजय कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (राज्य कर्मचारी)
मो०: 7007822504
महिपाल
राष्ट्रीय संयोजक (भारतीय जीवन बीमा निगम)
मो०: 9935456466
जगदीश प्रसाद दिनकर
राष्ट्रीय संयोजक (हथकरधा विभाग)
मो०: 9455593651
विवेक कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (सामाजिक संगठन)
मो०: 9616961612
श्रीमती सविता
राष्ट्रीय संयोजक (असंगठित क्षेत्र)
मो०: 8400430633
कु० ललिता
राष्ट्रीय संयोजक (महिला विभाग)
मो०: 7985811410
आशीष कुशवाहा
राष्ट्रीय संयोजक (अनुशिक्षण)
मो०: 8318038232
डा० अति दीपादन
राष्ट्रीय संयोजक (स्मारक एवं पार्क कर्मचारी)
मो०: 7269887945, 9258704062
विवेक कुमार चौधरी
राष्ट्रीय संयोजक (आयुध निर्माणियाँ अस्पताल)
मो०: 96969778910
महेश चन्द्र अहिरवार
राष्ट्रीय प्रवक्ता
मो०: 6388370835, 9956845323
विनोद कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (संविदा एवं व्यापार)
मो०: 9935783705

–: राज्य कार्यालय छत्तीसगढ़ :–

वार्ड नं० 35 दुर्गा नगर
नियर नगर पालिका निगम कार्यालय के पास
जिला रायपुर
श्रीमती रमा गजभिये
राष्ट्रीय संयोजक (छत्तीसगढ़/महाराष्ट्र)
मो०: 7828273934
आयुष गजभिये
राज्य प्रभारी
मो०: 9131112561
राजबहादुर अहिरवार (बस्तर)
राज्य सहप्रभारी
मो०: 620306631

–: राज्य कार्यालय राजस्थान :–

जी–19, नियर आटो स्टैण्ड
खुदानपुरी, जिला – अलवर
ताराचन्द
राज्य प्रभारी
मो०: 8504063363

–: पूर्वोत्तर राज्य कार्यालय असम :–

ग्राम – चिपरसंगम पार्ट–1
पो० – अलगापुर जिला – हैलाकांदी
बिलालुद्दीन चौधरी
प्रभारी पूर्वोत्तर राज्य
मो०: 9401027750
भवानी बूढ़ा ठोकी
प्रभारी असम राज्य
मो०: 6000539663
हरीनाथ चौहान
राष्ट्रीय संयोजन (असम & बिहार राज्य)
मो०: 6000380690
रितुदास
राष्ट्रीय संयोजक (असम & पं० बंगाल राज्य)
मो०: 8638349801

–: प्रभारी हरियाणा राज्य :–

देवेन्द्र सहरावत
मो०: 9068831086

–: प्रभारी बिहार राज्य :–

अनिलदास # 9651217573
रामप्यार साह # 6263491099

–: प्रभारी म० प्र० राज्य :–

महेन्द्र तुरकर
प्रदेश प्रभारी
मो०: 8878372412
पुष्पेन्द्र अहिरवार
प्रदेश प्रभारी
मो०: 9669376505
रमाशंकर
प्रदेश प्रभारी उ० प्र० (बेसिक शिक्षिक)
मो०: 9450850778
ईश्वरी प्रसाद
राज्य संयोजक उ० प्र० (भारतीय जीवन बीमा निगम)
मो०: 9794366838
रामसिंह
मण्डल संयोजक झांसी
मो०: 9616838281, 6392558232
अनिल कुमार
मण्डल प्रभारी कानपुर
मो०: 9198414002
सुनील कुमार
मण्डल संयोजक वाराणासी
मो०: 9935363730, 9170836363
दातादीन
मण्डल संयोजक लखनऊ
मो०: 8115511006
सुनील कुमार
मण्डल संयोजक प्रयागराज
मो०: 8948990184
सुभाष चन्द्र
मण्डल संयोजक प्रयागराज
मो०: 8303995957
सुभाष कुमार
मण्डल संयोजक कानपुर
मो०: 9695931879
राकेश कुमार
जिला प्रभारी इटावा
मो०: 8009802461

पदाधिकारी बनने के लिए सम्पर्क करें – 9454923394

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

हत्या के कारणों की मीमांसा

''यह मेरा प्रण है कि मैं दबे–पिसे लोगों की सेवा में और उन्हीं के कल्याण के लिए मरूंगा जिनके बीच मेरा जन्म और पालन–पोषण हुआ और जिनके बीच मैं रहा हूँ। मैं अपने इस पवित्र उद्देश्य से एक इंच भी नहीं हटूँगा, और न ही अपने निंदको की उग्र और अपमानपूर्ण आलोचना की परवाह करूँगा''– डॉ. आम्बेडकर 21 मई, 1932 –पुना में दिया गया भाषण।

हमने पिछले अध्याय में देखा की, डॉ बाबासाहब को सात अलग–अलग षड़यंत्रों द्वारा मारने का प्रयत्न किया गया। और वे प्रयत्न किन्हीं प्रकारों से असफल भी हो गये। तब ब्राह्मणवादियों ने समझ लिया की बाह्य आक्रमणों से हत्या करना सम्भव नहीं है इसलिए अंतर्गत आक्रमण की योजना बनाई। हत्या का यह आठवाँ प्रयत्न इन लोगों ने यशस्वी कर दिया। डॉ. बाबा साहब की हत्या करने वाली शक्ति आज भी अस्तित्व में है। बाबासाहब की हत्या के कारण ही उन्हें देश भर में व्यवस्था पर अनियंत्रित अधिकार प्राप्त हो सका। यह भी उतना ही सत्य है। इसलिए उस शक्ति की भयानक विनाश लीला को समझते हुये बाबासाहब की हत्या की कारण मिमांसा हम कर रहे हैं। ये कारण कुछ लोगों को विचित्र लग सकते हैं परन्तु यही सही कारण हैं। यह शोध हमने जिन मूल साधनों के आधार पर किया है, उनसे ही यह आश्चर्यकारक कारणों का खुलासा हुआ है।

डॉ. बाबासाहब, ब्राह्मणी व्यवस्था के लिये बहुत ही बड़ी चुनौती थी। कारण बाबासाहब मूलनिवासी बहुजनों को प्राप्त, एक ऐसे महापुरूष थे, जो 6 हजार जातियों को जोड़ने का महान कार्य कर रहे थे। इस महान कार्य की पूर्ति के लिये उन्होंने आंदोलन शास्त्र का भी विकास किया। देशव्यापी संगठन निर्माण किया। मूलनिवासी बहुजनों में चेतना निर्माण की। गुलाम को गुलाम होने का एहसास करा दिया। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की हत्या ही ब्राह्मण के सामने आखरी पर्याय बचा था। परंतु यह हत्या की योजना बनाते समय उन लोगों ने कुटिल एवं षड़यंत्रकारी बुद्धि का प्रयोग किया। उसने हत्या तो की ही परंतु प्रचार उल्टा किया की नैसर्गिक मृत्यु हुई। ब्राह्मणी व्यवस्था को बचाने के लिये सभी ब्राह्मणों ने उस षड़यंत्र का समर्थन किया। ब्राह्मण परिस्थितिनुसार अपना रंग बदलता है। ब्राह्मण कहीं भी जाये, किसी भी संगठन में जाये, वो ब्राह्मण ही रहता है। इस तरह सभी ब्राह्मणों का उद्देश्य इस व्यवस्था पर वर्चस्व स्थापित करना ही होता है। शिक्षित वर्ग में, ब्राह्मणी व्यवस्था के प्रति आकर्षण पैदा कर उन्हें दलाल व्यवस्था में रूपांतरण करना, यह ब्राह्मणी तंत्र है। परंतु आज भी अशिक्षित वर्ग और आदिवासी वर्ग में, ब्राह्मणों से सावधान रहो' ऐसा तत्वज्ञान जिंदा है। ब्राह्मणों के कपटी चरित्र को दर्शाने वाली देशव्यापी कहावतें प्रचलित हैं। ऐसी कहावतें असंख्य हैं। एक कहावत पूर्वी भारत के झारखंड–आदिवासी भाग में प्रसिद्ध है। देखिये, ''कैइले बामन दिखने वाला, साप खेड़ले तूरे खाबे बामून खेड़ले तूरन गुष्टिरे खावे।'' अर्थात–''ब्राह्मण अधिक जहरीला है की साँप? साँप यदि काटता है तो हम अकेले मरेंगे, परन्तु ब्राह्मण ने यदि काटा तो तुम्हारी पीढ़ी दर पीढ़ी का सत्यानाश तय है।'' आदिवासियों में ब्राह्मणों से सावधान रहो, जो संदेह है वह बहुत मार्मिक है।

डॉ. बाबासाहब की हत्या के कारण

डॉ. बाबासाहब की हत्या के कारण और उसकी पृष्ठभूमि का संक्षिप्त इतिहास जानना और समझना बहुत जरूरी है। उनकी हत्या के कारणों के शोधकार्य में हमें जो जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं, वो निम्न हैं–

1. पूना समझौता का धिक्कार करना अर्थात ब्राह्मण वर्चस्व को नकारना, हत्या का कारण बना।

2. देशव्यापी संगठन निर्माण कर एस.सी.एस.टी. जातियों की समस्याएँ हल की, इसी प्रकार ओ.बी.सी. का मुद्दा उठाने के कारण ब्राह्मणी व्यवस्था को झटका लगा। इसलिये ब्राह्मणों ने उनकी हत्या की।

3. ब्राह्मणी व्यवस्था को नकार कर याने बी.पी.सी (ब्राह्मणीकल पीनल कोड) आय.पी.सी. (इंडियन पीनल कोड) लागू किया। ब्राह्मणी व्यवस्था को कानून के माध्यम से नकारने के कारण हत्या की गई।

4. 'दो वर्षों में मैं भारत को बौद्धमय कर दूंगा'– यह बाबासाहब का विधान, उनकी हत्या का कारण बना।

5. सभी सामाजिक समूह शासक न बनें इसलिए हत्या की गई।

उपरोक्त कारणों का अध्ययन एवं विश्लेषण करने पर ही यही दिखाई देता है कि, इस घटना को अंजाम देने के लिए मात्र एक दो व्यक्तियों का उपयोग नहीं किया गया है परन्तु एक बड़ा समूह इस षड़यंत्र के पीछे कार्यरत था। क्रांग्रेस, यह ब्राह्मणी पक्ष, इस षड़यंत्र में सीधे सहभागी था। रामदासी सेवक संघ का इस काम के लिए पूर्ण समर्थन था।

पूना समझौता में डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के हत्या के कारण छुपे हैं। आईये इस बिंदू पर थोड़ा विस्तार से विचार करें। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने उम्रभर पुणे समझौता का विरोध किया। उनके अनुसार पूना समझौता, मूलनिवासी बहुजनों को प्रतिनिधित्वहीन करता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि, जिस ब्राम्हणी व्यवस्था के हम शिकार हैं, वही ब्राह्मणी व्यवस्था इस पुणे करार के कारण जीवित है। ब्राह्मण का अनियंत्रित वर्चस्व रहता है। इस व्यवस्था से समाज को सच्चे प्रतिनिधी नहीं मिलते हैं। परन्तु उलट उससे टूल, स्टूज, एजंट याने दलाल और भडवे पैदा होते है। तलवे चाटने वाले और दुम हिलाने वाले कुत्ते तैयार होते हैं। 29 अक्टूबर 1951 को पटियाला (पंजाब) में शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन की विशाल सभा बाबासाहब ने ली। उस सभा में पूना समझौता के कारण चुने गये मंत्रियों, नेताओं को 'हरिजन मंत्री' सम्बोधित किया गया। 'हरिजन' शब्द गांधी जी का था। इस हरिजन शब्द का उनके ही विरोध में प्रयोग में लाया गया। पूना समझौता के कारण कांग्रेस के भरोसे पर चुनकर आये उम्मीदवार– 'वे कुत्तों के जैसा अपने स्वामि के पैर चाटते हैं।' ऐसे शब्दों में टीका की।

डॉ. आम्बेडकर की 'पूना समझौता' धिक्कार की विचारधारा आज भी ब्राह्मणवादियों को अखरती है। ब्राह्मणवादियों का वर्चस्व सदा कायम रहे, इसी हेतु से पूना समझौता हुआ था। परन्तु बाबासाहब ने अपनी पूर्ण आयुष्य पूना समझौते का विरोध किया। गांधी और कांग्रेस ने बाबासाहब को दबाने का प्रयत्न किया परन्तु बाबासाहब उनके सामने झुके नहीं। सन 1932 से 1942 तक के इन 10 वर्षों में बाबासाहब ने क्रांग्रेस के विरोध में एक देशव्यापी बड़ी शक्ति खड़ी की। बाबासाहब का नेतृत्व कौशल्य इतना जबरदस्त था की, उनके सामने कांग्रेसी आदमी खड़ा ही नहीं हो सकता था। 18, 19 और 20 जुलाई, 1942 को नागपुर में आल इंडिया शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन का राष्ट्रीय स्तर पर भव्य सम्मेलन हुआ। 75 हजार कार्यकर्ता देशभर से आये थे। कांग्रेस को इस सम्मेलन के कारण डर पैदा हो गया कि अब! इस स्वाभीमानी आंदोलन को दबाना तो कैसे? ''हमारी लड़ाई केवल सत्ता और संपत्ती के लिए नहीं है, वह संपूर्ण आजादी के लिए है।'' जैसे ही बाबासाहब ने घोषित किया कांग्रेस और नेहरू को उसका धक्का लगा। अर्थात यदि बाबासाहब सफल हो गये तो ब्राह्मणों का क्या होगा? ब्राह्मणों के वर्चस्व को यदि धोखा था तो वह केवल मात्र बाबासाहब से ही।

19 मार्च 1947 को 'स्टेट अंड मायनारिटी' यह लेखी मेमोरेण्डम संविधान सभा को बाबासाहब ने दिया। 'पूना समझौता' का धिक्कार किया और इतना ही नहीं तो सन 1946 में संपूर्ण देशभर में पूना समझौता के विरोध में रैली और प्रदर्शन और जेलभरो आंदोलन किया। समग्र गांधी साहित्य में, एक पत्र मिला है, जिसमें खुद गांधी को बाबासाहब के आंदोलन से भय पैदा हो गया था, ऐसा उल्लेख हैं पूना समझौता का इतना बड़ा धक्का कांग्रेसी लोगों को हो गया था। इस देशव्यापी आंदोलन के कारण संपूर्ण भारत में कार्यकर्ता जेल जाने लगे। महाराष्ट्र में आर.आर.भोले के नेतृत्व में पूना समझौता का विरोध किया। उत्तर प्रदेश में आगरा शहर में एक अत्यंत वयोवृद्ध व्यक्ति मास्टर मानसिंग अभी भी जीवित है, उन्होंने पूना समझौता धिक्कार आंदोलन में भाग लिया था और उसे भी जेल हुई थी। कांग्रेस ने पहले सार्वजनिक चुनाव में षड़यंत्र की पराकाष्ठा कर दी और बाबासाहब को संसद में जाने ही नहीं दिया। और इसी उद्देश्य से कांग्रेस ने डांगे इस कम्युनिस्ट ब्राह्मण को भी नियंत्रित कर लिया। इसके बाद बाबासाहब भंडारा (विदर्भ) से आरक्षित मतदार संघ से चुनाव लड़े और पुनः इतना ही नहीं तो सर्वसाधारण मतदार संघ से भी चुनाव लड़े। वहाँ भी कांग्रेस ने भीतर घात लगाकर षड़यंत्र किया। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जैसे व्यक्ति को जिन्होंने लोकतंत्र की निर्मिती भारत में की और एक इतिहास रचा दिया, उन्हें ही उस संसदीय लोकतंत्र से बाहर रखने का षड़यंत्र कांग्रेस ने किया। डॉ. बाबासाहब यदि लोकसभा में गये तो क्या हंगामा होगा इसकी संकल्पना नेहरू को थी। इसी नेहरू ने तीन प्रतिशत युरेशियन ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित कर दिया। लोकतंत्र से बाहर रखने का षड़यंत्र कांग्रेस ने किया। डॉ. बाबासाहब यदि लोकसभा में गये तो क्या हंगामा होगा इसकी संकल्पना नेहरू को थी। इसी नेहरू ने तीन प्रतिशत युरेशियन ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित कर दिया।

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने दूरदृष्टि से अनुभव कर लिया था कि, भविष्य में कांग्रेस का वर्चस्व देश पर कायम रहा तो, देश का सत्यानाश होगा इसलिये उन्होंने ऐसी भावी रणनीति बनाई जो ब्राह्मणवादियों को बहुत खटकने लगी। बाबासाहब को पुर्वानुमान था इसलिये उन्होंने संविधान सभा में जो भाषण दिया उसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से इशारा किया, 'जिस संविधान में आपने लोगों का, लोगों के लिए चुना हुआ शासन इस तत्व की सुरक्षा की है उसे अगर आप सुरक्षित रखना चाहते हो तो, हमारी राह में कौन सी रूकावटे आनेवाली हैं इस बात को आपकों पहले ही समझ लेना चाहिए, ताकि लोगों ने चुनकर दी हुई सरकार की तुल नामें 'लोगों के लिए सरकार' को लोग अधिक पसन्द करने लगेंगे, इस बात के लिए आप दुर्बल ना हो, देश की सेवा करने का यही सबसे अच्छा एकमेव मार्ग है। दूसरा इससे भी अच्छा मार्ग मुझे पता नहीं।''

यदि लोगों की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो यही लोग लोकतंत्र का मंदिर नष्ट कर देंगे। बाबा साहब का अनुमान सही निकला और उसका कारण पुणे समझौता है।

शेड्युल्ड कास्ट फेडरेशन की विविध बैठकें हुई। उन बैठकों में आरक्षित मतदार संघ अर्थात पुणे समझौता का विरोध किया गया। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर का एक साक्षात्कार बी.बी.सी वर्ल्ड लंदन ने लिया। उस ऐतिहासिक साक्षात्कार को हमने बाबासाहब की 19 अप्रकाशित डायरियों की परिशिष्ट में छपाया है। यह भेंट 1955 में ली गई थी। उस भेंटवार्ता में उन्होंने पुणे समझौता का धिक्कार किया था। वर्ष में केवल एक बार संयुक्त मतदार संघ पद्धती के लिए एक कतार में खड़े होने से हमारे जीवन में कौनसा राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक बदल होता है? ऐसा प्रश्न भी उठाकर उस पद्धती का धिक्कार किया है। भेटवार्ता के अंत में उन्होंने यह भी कहा, ''मैंने गांधी को कभी भी महात्मा नहीं कहा और गांधी महात्मा बनने लायक भी नहीं है।''

बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पूर्व ही पुणे समझौता अर्थात आरक्षित मतदार संघ पद्धति नकारने की योजना बनाई गई थी। नये सिरे से अपने राजनैतिक पक्ष की रचना कर विस्तृत आधार पर उसका नियोजन करने की संकल्पना आकार ग्रहण करने वाली थी। इस राजनैतिक दल का नामकरण ध्येय, उद्देश्य, दृष्टिकोण आदि सबकुछ निश्चित हो गया था। यदि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर, पुणे समझौता की यंत्रणा को अर्थात षड़यंत्र को पराजीत करने में यशस्वी हो गये तो वे अपने आयुष्य में ही संसद में बहुमत सिद्ध करने लायक हो जायेंगे। इतना ही क्यों, विरोधी पक्ष की भी स्थापना कर देंगे, इसलिए किस आधार पर यह कहा जा सकता है कि, उनकी हत्या करें ऐसा ब्राह्मणों को नहीं लगा होगा? डॉ. बाबासाहब ने अपनी भावी योजना में कांग्रेस का पत्ता पूरी तरह साफ करने की योजना बनाई थी। अल्पसंख्यक ब्राह्मणों का बहुसंख्यक लोगों पर जो वर्चस्व स्थापित करने का तंत्र है व लोकतंत्र नहीं है, परंतु अलोकतंत्र है। ब्राह्मणों के वर्चस्व को जब–जब धोखा उत्पन्न होता है तब वो हत्याकांड का सहारा लेता है और अपना वर्चस्व बनाये रखता है, यह उनका इतिहास है।

साभार

डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर की हत्या किसने क्यों और कैसे की?

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

चौदहवीं पहली

अहिंसा से हिंसा पर वापसी

''हिंसा से अहिंसा तक'' अहिंसा की कहानी का मात्र एक भाग है। कहानी का एक दूसरा हिस्सा भी है, जिसकी व्याख्या ''अहिंसा से हिंसा पर वापसी'' शीर्षक के अन्तर्गत की जा सकती है। कहानी के दूसरे हिस्से से यह स्पष्ट हो जाएगा कि तंत्र और तंत्रवाद की धार्मिक परम्पराएं थीं, जिनका सन्दर्भ पहले दिया जा चुका है।

तांत्रिक पूजा के लिए ''पंच मकार'' अनिवार्य हैं। इन पंच मकारों में निम्न वस्तुएं होती हैं :

1. विभिन्न प्रकार के तरल पदार्थ एवं मद्य पान	(मद्य)
2. मांस–भक्षण	(मांस)
3. मछली–भक्षण	(मत्स्य)
4. भुने अनाज खाना	(मुद्रा)
5. सहवास	(मैथुन)

यह कहना निरर्थक है कि मैथुन धार्मिक कर्मकांड का एक अंग है। मद्य और मांस का प्रसंग पर्याप्त रहेगा।

तंत्र के प्रथम चार कार्यों के लिए बारह प्रकार की मदिरा का विधान है। तीन प्रकार की शराब और तीन प्रकार का मांस बताया गया है। एक प्राचीन ऋषि पौलस्त्य ने भी, जो कई संहिताएं लिख चुके हैं, बारह प्रकार की मदिरा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है:

1. पनसा (फल) से निकाली गई शराब, जिसे कटहल–शराब कहा जाता है,
2. अंगूर के बनी (द्राक्षा),
3. खजूर से बनी (खरजूरी)
4. सामान्य ताड़ी से बनी (ताड़ी)
5. नारियल से बनी (नारिकेल),
6. ईख से बनी (इक्षु),
7. माधविका के पौधे से बनी मदिरा,
8. पीपल से बनी (सैरा),
9. बेर से बनी (आरिष्ट),
10. शहद से बनी (मधुका),
11. शीरे से तैयार रम के समान (गौडी या मैरेयू),
12. अरक, चावल और अन्य अनाज से बनी मदिरा जो सुरा, वारूणी या पैश्ती के नाम से जानी जाती है।

उपरोक्त मादक द्रव्यों के साथ–साथ जिनका बार–बार जिक्र आया है, वे है तन्का सेब से निर्मित, कोली और कादम्बरी, इनमें अंतिम मदिरा बलरामजी को अति प्रिय थी।

मांस पक्षियों, जंतुओ अथवा मछली का हो सकता है। मादक द्रव्यों का आनन्द लेने के लिए भुना अन्न खाया जाता है। प्रत्येक मद्य के अपने गुण और लाभ बताए गए हैं। उन्हीं के अनुसार उसका पान किया जाता है। इस प्रकार एक मदिरा से मोक्ष मिलता है, एक से ज्ञान, दूसरी से शक्ति, एक से सम्पदा, एक शत्रुनाशी, दूसरी रोगहारी, एक पापनाशी है और एक आत्मा को शुद्ध करती है।''

तांत्रिक पूजा बंगाल के आंतरिक भागों में पहुंच गई। अपने अनुभवों के आधार पर राजेन्द्र लाल मित्र कहते हैं।

''मैं कलकत्ता के एक उच्च संभ्रांत परिवार से संबद्ध एक अति सम्मानित महिला को जानता था, जो कौल सम्प्रदाय से संबंधित थी और पिछहत्तर साल तक जीवित रही। ऐसा कभी नहीं हुआ कि उसे अपनी प्रार्थना (वह प्रतिदिन सुबह–शाम करती थी) कभी अपनी जीभ में सींक से अरक छुआए बिना और भगवान की पूजा फूलों पर शराब छिड़के बिना की हो। मुझे इस बात में संदेह है कि उसने अपने जीवन–काल में कुल मिलाकर एक गिलास अरक पिया हो और यह निश्चित है कि उसको मदिरापान के सुख का ध्यान भी नहीं था। परन्तु एक आस्थावान कौल के अनुकूल वह अपने धर्म–पालन के लिए धर्मभीरूता के कारण प्रतिबद्ध थी। और भी हजारों का यही हाल है। मुझे इसका पूरा विश्वास है बंगाल के जिन भागों में अरक सहज उपलब्ध नहीं है, भक्त महिलाओं ने उसका विकल्प ढूंढ लिया है; वे धातु निर्मित घंटी (पात्र) में नारियल का दूध डालती हैं अथवा तांबे के बर्तन में कुछ बूंद दूध डाल लेती हैं। बहरहाल, पुरूष इतने संयमी नहीं। तंत्र का विधान पांच प्यालों का है। प्याला इस प्रकार का होता है कि उसमें पांच तोला या दो औंस आती है अर्थात वे एक दिन में दस औंस अरक ले सकते हैं।''

तांत्रिक पूजा बंगाल के एक छोटे से अंचल तक सीमित नहीं है जैसा कि महामहोपाध्याय जादवेश्वर तारकरत्न ने कहा है :

'जैसे कि बंगालियों की उच्च जातियां शाक्त, वैष्णव और शैवों में विभाजित हैं, यही बात एक प्रकार से कामरूप, मिथिला, उत्कल अथवा कलिंग और कश्मीरी पंडितों के साथ है। शक्ति मंत्र, शिवमंत्र, तथा विष्णु मंत्र प्रत्येक तांत्रिक हैं। दक्षिणात्यों में महामहोपाध्याय सुब्रहमण्यम शास्त्री और कई अन्य शाक्त हैं। स्वर्गीय महामहोपाध्याय राम मिश्र शास्त्री भागवताचार्य और कई अन्य वैष्णव थे, और हैं। महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री तथा कई अन्य शैव हैं। वृंदावन में अनेक शाक्त और साथ ही वैष्णव ब्राह्मण हैं। यद्यपि महाराष्ट्र की कुलीन जातियों तथा अन्य दक्षिण भारतीय प्रदेशों में शैव और वैष्णव; शाक्तों की अपेक्षा अधिक है। पाशुपात तथा जंगम पथ के अनुयायी शैव हैं जबकि माधवाचार्य और रामानुजाचार्य के वैष्णव उत्तर–पश्चिम में राम मंत्र में दीक्षित हैं, जो मात्र तंत्र से मिलता है। इस लेखक के अनुसार पण्डा और श्री पुरूषोत्तम सभी शाक्त हैं और कामाख्या देवी के सभी पुजारी वैष्णव हैं।''

तंत्र और तंत्र–पूजा कब आरम्भ हुई ? इसका निश्चित समय बताना तो संभव नहीं है परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि यह काल मनु के बाद का है। तंत्र विकास का यह पक्ष महान आश्चर्य की बात है। तंत्रों ने न केवल मांस और मदिरा पर मनु द्वारा लगाए गए प्रतिबंध तोड़े अपितु मांस–भक्षण और मदिरापान को आस्था का साधन बना दिया।

आश्चर्यजनक बात यह है कि ब्राह्मणों ने तंत्रों और तंत्र–पूजा को प्रोत्साहित किया। तंत्रों की वेदों में आस्था नहीं है। तांत्रिकों का कथन है कि वेद एक बाजारू औरत के समान है जिसे चाहे भोगे किंतु तंत्र एक कुलीन नारी है जो एक ही से बंधी है। ब्राह्मणों ने तंत्र का कभी खण्डन नहीं किया बल्कि उन्होंने इसे पंचम वेद माना। मनुस्मृति के विख्यात भाष्यकार सनातनी ब्राह्मण कुल्लूक भट्ट ने कहा कि श्रुतियां दो हैं, वैदिक और तांत्रिक।

ब्राह्मणों ने न केवल तंत्रों का खण्डन किया बल्कि वास्तव में तंत्र–पूजा को प्रोत्साहित किया। मातृका भेद तंत्र में शिव अपनी भार्या पार्वती को ऐसे कहते हैं:

'हे मृदुभाषी देवी! ब्राह्मणों को मदिरा पीने से मोक्ष प्राप्त होता है। मैं तुम्हें एक महान सत्य बताता हूं। हे पर्वत–पुत्री! जब मैं कहता हूं, कि जो ब्राह्मण मदिरा पान और उसके संसर्ग में लिप्त होता है तो वह स्वयं शिव हो जाता है। बल्कि जैसे जल–जल में मिल जाता है, धातु–धातु में घुल जाती है, जैसे एक घड़े का सीमित आकार एक बड़े आकार के पात्र में विलीन हो जाता है और वायु–वायु में समा जाती है, इस प्रकार ब्राह्मण विश्वात्मा ब्रह्म से एकाकार हो जाता है।'

'इस संबंध में' रंचमात्र संदेह नहीं कि दिव्यता की आशा और परम सुख के अन्य रूप क्षत्रियों तथा अन्यों के लिए हैं, किन्तु सच्चा ज्ञान मादक द्रव्य के बिना कदापि प्राप्त नहीं किया जा सकता। तो क्या ब्राह्मण को सदैव इसका सेवन करना चाहिए? वेदों की जननी गायत्री को रट–रट कर कोई पंडित नहीं बन सकता। पंडित तभी बनता है जब उसे ब्रह्म–ज्ञान हो। देवताओं के लिए ब्रह्म ही अमृत है और धरा पर यह अरक है (चावल से बनी शराब) क्योंकि इसी के माध्यम से देवत्व (सुरत्व) की स्थिति प्राप्त होती है। इसलिए यह सुरा कहलाती है।

ब्राह्मणों ने पितामह मनु को क्यों नकार दिया और दुबारा मांस–मदिरा का सेवन क्यों आरम्भ कर दिया जिसे मनु ने बंद कर दिया था, यह एक पहेली है।

साभार :
डा० बी. आर. अम्बेडकर वाङ्मय खंड 8
पृ.सं. 122 से 126 तक

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के सुविचार

1. शिक्षा एक ऐसा माध्यम है। जो प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचनी चाहिये। शिक्षा सस्ती से सस्ती हो जिससे कि निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी शिक्षा प्राप्त कर सकें।
2. हिन्दू सोसायटी उस बहुमंजिले मीनार की तरह है जिसमें प्रवेश करने के लिए न सीढ़ी है। न दरवाजा जो जिस मंजिल में पैदा हो जाता है। उसे उसी मंजिल पर मरना होता है।
3. एक विद्वान और बुद्धिजीवी में महान अंतर है। उनका अलग–2 संसार है। इनमें से पहले में अपने वर्ग की चेतना होती है और वह अपने वर्ग के हितो के लिए जीता है। दूसरा बुद्धिजीवी इस प्रकार के कार्य करने से मुक्त होता है और उसे वर्ण चेतना प्रभावित नहीं कर पाती।
4. राष्ट्रवाद तभी औचित्य ग्रहण कर सकता है, जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग का अंतर भुलाकर उनमें सामाजिक भ्रातृत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाए।
5. दुःख निवारण के लिये बौद्ध धर्म का मार्ग ही सुरक्षित मार्ग है। बौद्ध धर्म पूर्णतः भारतीय है और गौतम बुद्ध न केवल भारत के उद्धारक थे बल्कि संपूर्ण मानवता के उन्नायक थे।

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।